

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 19-07-2025

विषय सूची

- » सरकार का लक्ष्य अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भागीदारी में 10% तक वृद्धि
- » 2025 के लिए वैश्विक आर्द्धभूमि आउटलुक
- » भारत और UAE: परमाणु ऊर्जा और उन्नत प्रौद्योगिकी सहयोग
- » भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों के विरुद्ध अपराधों के लिए जवाबदेही का आह्वान दोहराया
- » केरल: भारत में जैव विविधता खोज का शीर्ष केंद्र

संक्षिप्त समाचार

- » INS निस्तार: प्रथम स्वदेशी गोताखोरी सहायता पोत
- » हिंदू कुश हिमालय
- » लायन-टेल्ड मेकाक
- » सिम्बेक्स अभ्यास
- » विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सेनेगल को ट्रेकोमा मुक्त घोषित
- » सामुदायिक कुत्तों के पोषण की व्यवस्था करना
- » कृषि खाद्य प्रणालियों में युवाओं की स्थिति पर रिपोर्ट: FAO
- » 'ट्रेड कनेक्ट' ई-प्लेटफॉर्म
- » क्रॉनिक वेनस इन्सफिशिएंसी
- » सोकोट्रा द्वीप

सरकार का लक्ष्य अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भागीदारी में 10% तक वृद्धि

संदर्भ

- संघीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री ने कहा है कि सरकार 2047 तक देश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के योगदान को 10% तक बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत का पर्यटन क्षेत्र: मुख्य विशेषताएँ

- भारत का पर्यटन क्षेत्र, जो विरासत, संस्कृति एवं विविधता से समृद्ध है, वैश्विक पसंदीदा बनकर उभर रहा है और आर्थिक वृद्धि का प्रमुख चालक बन रहा है।
- वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था \$4 ट्रिलियन है, जो 2047 तक \$32 ट्रिलियन तक पहुँचने की संभावना है।
- वर्तमान में पर्यटन का योगदान भारत की अर्थव्यवस्था में 5-6% है।
- लक्ष्य है कि 2047 तक पर्यटन का योगदान 10% हो — जो वैश्विक मानकों के अनुरूप है।
- भारत ने 2023 में विश्व पर्यटन प्राप्तियों में 1.8% हिस्सा प्राप्त किया और विश्व पर्यटन प्राप्तियों में 14वाँ स्थान प्राप्त किया।
- अनुमानित वृद्धि:** पर्यटन क्षेत्र की वार्षिक संयोजित वृद्धि दर (CAGR) 24% रहने की संभावना है।
- आध्यात्मिक पर्यटन:** भारत का प्रत्येक राज्य विविध और अद्वितीय सांस्कृतिक अनुभव प्रस्तुत करता है।
- सतत विकास पर ध्यान:** पर्यटन वृद्धि के साथ-साथ सतत पर्यटन विकास को प्राथमिकता दी जा रही है।

भारत में प्रस्तावित पर्यटन के प्रकार

- उत्तर में हिमालयी पर्वत शृंखलाओं और दक्षिण में तीन समुद्रों से घिरे विस्तृत तटों के बीच भारत ऐतिहासिक स्थलों, शाही नगरों, स्वर्णिम समुद्री तटों, पर्वतीय शरणस्थलों, समृद्ध संस्कृतियों और उत्सवों से भरपूर है।
- रोमांचक पर्यटन:** इसमें दूरस्थ स्थानों और अद्वितीय क्षेत्रों की खोज एवं विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी शामिल है।
 - भारत में रोमांचक पर्यटन के लिए पर्यटक लद्वाख, सिक्किम और हिमालय में ट्रैकिंग करना पसंद करते हैं।

- आध्यात्मिक पर्यटन:** भारत के धर्मों, संस्कृतियों और भाषाओं की विविधता अद्वितीय एवं अनुपम है जो आध्यात्मिकता को बढ़ावा देती है।
- समुद्र तटीय पर्यटन:** भारत के विशाल तटों और द्वीपों में पर्यटन के भरपूर अवसर उपलब्ध हैं।
 - केरल, गोवा, अंडमान एवं निकोबार द्वीप, लक्षद्वीप द्वीप पर्यटकों को वर्ष भर आकर्षित करते हैं।
- सांस्कृतिक पर्यटन:** भारत अपने समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और रहस्यात्मकता के लिए जाना जाता है, जिससे पर्यटक इसे स्वयं अनुभव करने आते हैं।
 - भारत में पर्यटकों द्वारा देखे जाने वाले प्रमुख मेले और उत्सव हैं: पुष्कर मेला (राजस्थान), ताज महोत्सव (उत्तर प्रदेश), और सूरज कुंड मेला (हरियाणा)।
- वन्यजीव पर्यटन:** भारत के घने वन क्षेत्रों में दुर्लभ और विलुप्तप्राय प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिससे वन्यजीव पर्यटन को बढ़ावा मिला है।
- चिकित्सा पर्यटन:** पुरे विश्व से पर्यटक सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भारत आते हैं।

चुनौतियाँ

- बुनियादी ढांचे की कमी:** कई पर्यटन स्थलों पर सड़कें खराब हैं, सार्वजनिक परिवहन अपर्याप्त है और सुविधाओं की कमी है।
- पर्यावरणीय क्षरण:** बढ़ता पर्यटन प्रदूषण, संसाधनों का अधिक उपयोग और पारिस्थितिकी तंत्र को हानि पहुँचाता है।
- मानकीकरण की कमी:** होटल, रेस्टोरेंट्स, और टूर ॲपरेटरों सहित सेवाओं में गुणवत्ता की स्थिरता नहीं है।
- मौसमीता:** कई पर्यटन स्थलों पर पीक सीजन में पर्यटकों की अधिक संख्या होती है और ऑफ-सीजन में बहुत कम।
- प्रचार और विपणन की समस्याएँ:** प्रभावी प्रचार रणनीतियाँ कमज़ोर हैं; कम प्रसिद्ध स्थलों को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।
- सांस्कृतिक संवेदनशीलता और प्रबंधन:** सांस्कृतिक धरोहर को जिम्मेदारी से संभालना और पर्यटन आवश्यकताओं का संतुलन चुनौतीपूर्ण है।

सरकारी पहलें

- संपर्क और निवेश बढ़ाना:** 2025 के बजट में वित्त मंत्री ने राज्यों के सहयोग से 50 प्रमुख पर्यटन स्थलों को विकसित करने की पहल की है।
 - इसका उद्देश्य पर्यटन बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाना, यात्रा की सुविधा को बढ़ाना और प्रमुख स्थलों से जुड़ाव को सुदृढ़ करना है।
- स्वदेश दर्शन योजना:** यह योजना पूरे देश में थीम-आधारित पर्यटन सर्किट विकसित करने के लिए शुरू की गई थी।
 - इसका लक्ष्य विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा विकसित करना है — सड़कें, सुविधाएँ और संकेतक शामिल हैं।
- आध्यात्मिक पर्यटन को पुनर्जीवित करना:** धार्मिक और विरासत स्थलों के विकास को प्राथमिकता देने की योजना है।
 - PRASHAD योजना प्रमुख तीर्थ स्थलों और विरासत शहरों में बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाती रहेगी।
- चिकित्सा पर्यटन:** “हील इन इंडिया (Heal in India)” पहल को निजी क्षेत्र के साथ मिलकर आगे बढ़ाया जाएगा।
- अतिथि देवो भव अभियान:** इस पहल में मेहमानों को सम्मान और देखभाल देने की भारतीय परंपरा को बढ़ावा दिया जाता है।
 - इसमें पर्यटन क्षेत्र में सेवा प्रदाताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शामिल हैं।
- बीजा सुधार:** कई देशों के नागरिकों के लिए ई-बीजा प्रणाली शुरू की गई है जिससे भारत आने की प्रक्रिया आसान हो गई है।
- सतत पर्यटन के लिए समर्थन:** सरकार विभिन्न योजनाओं और दिशानिर्देशों के माध्यम से पर्यावरण-संवेदनशील और जिम्मेदार पर्यटन को प्रोत्साहित कर रही है।
- 2025-26 के बजट में रोज़गार-आधारित वृद्धि को बढ़ावा देने के उपाय:**
- होमस्टे के लिए MUDRA क्रण प्रदान करना

- राज्यों को प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन देना — जिसमें पर्यटक सुविधाएँ, सफाई और विपणन प्रयास शामिल हैं
- कुछ पर्यटक समूहों के लिए बीजा शुल्क माफ करना और ई-बीजा सुविधाओं को सुव्यवस्थित करना

निष्कर्ष

- भारत सरकार पर्यटन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है — बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाने, रोज़गार को बढ़ावा देने और विभिन्न पर्यटन खंडों को विकसित करने पर ध्यान दिया जा रहा है।
- “हील इन इंडिया(Heal in India)” पहल और मेडिकल वैल्यूट्रैवल क्षेत्र भारत की वैश्विक स्वास्थ्य गंतव्य के रूप में बढ़ती प्रतिष्ठा को रेखांकित करते हैं।
- ‘सेवा’ एवं ‘अतिथि देवो भव’ की भावना के साथ, भारत अपने पर्यटन परिदृश्य को पुनर्परिभाषित करने और विश्वस्तरीय गंतव्य बनाने की दिशा में अग्रसर है।

Source: IE

2025 के लिए वैश्विक आर्द्धभूमि आउटलुक संदर्भ

- रैमसर कन्वेशन ऑन वेटलैंड्स ने वर्ष 2025 के लिए वैश्विक आर्द्धभूमि आउटलुक जारी किया है।
- आर्द्धभूमि आउटलुक 2025 के बारे में**
 - यह आर्द्धभूमियों की स्थिति, प्रवृत्तियों, महत्व और नीति प्रतिक्रियाओं का नवीनतम वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करता है।
 - प्रकाशनकर्ता:** वेटलैंड्स कन्वेशन के साइटिफिक एंड टेक्निकल रिव्यू पैनल (STRP)।
 - ग्यारह व्यापक आर्द्धभूमि प्रकारों का मूल्यांकन किया गया:** सीग्रास, केल्प फॉरेस्ट्स, कोरल रीफ्स, एस्टुअरीन वॉटर, सॉल्ट मार्शेस, मैन्ग्रोव, टाइडल फ्लैट्स, झीलें, नदियाँ व जलधाराएँ, आंतरिक दलदली क्षेत्र और पीटलैंड्स (मार्यस)।

मुख्य निष्कर्ष

- आर्द्धभूमि का ह्रास जारी है:: 1970 से अब तक अनुमानित 411 मिलियन हेक्टेयर आर्द्धभूमियां समाप्त

- हो चुकी हैं, जो वैश्विक क्षेत्रफल में 22% की गिरावट दर्शाता है।
 - औसतन आर्द्धभूमि हानि की दर -0.52% प्रति वर्ष रही (जो वेटलैंड प्रकार के अनुसार -1.80% से -0.01% के बीच रही)
- आर्द्धभूमि का क्षरण व्यापक है:: हाल के वर्षों में लैटिन अमेरिका, कैरिबियन एवं अफ्रीका में गिरावट स्पष्ट है; जबकि यूरोप, उत्तरी अमेरिका और ओशिनिया में क्षरण की तीव्रता बढ़ी है।
- क्षरण के कारण:** अफ्रीका, लैटिन अमेरिका व कैरिबियन में नगरीकरण, औद्योगीकरण और आधारभूत ढांचा विकास प्रमुख कारण हैं।
 - उत्तरी अमेरिका व ओशिनिया में आक्रामक प्रजातियाँ चिंता का विषय हैं, जबकि यूरोप में सूखा मुख्य कारण रहा।
- उच्च मूल्य संसाधन:** बचे हुए 1,425 मिलियन हेक्टेयर वेटलैंड्स प्रति वर्ष अनुमानित \$7.98 ट्रिलियन से \$39.01 ट्रिलियन मूल्य के लाभ प्रदान करती हैं। यदि इन्हें 2050 तक प्रभावी रूप से प्रबंधित किया जाए, तो यह \$205.25 ट्रिलियन से अधिक का नेट प्रेजेंट वैल्यू (NPV) प्रदान करेगी।
- संरक्षण बनाम पुनर्स्थापन:** स्वस्थ आर्द्धभूमियों का संरक्षण उनकी पुनर्स्थापना की तुलना में सस्ता होता है — पुनर्स्थापना की औसत लागत प्रति हेक्टेयर \$1,000 से \$70,000 तक हो सकती है।
- वित्तीय अंतराल:** वर्तमान में जैव विविधता संरक्षण के लिए वित्त पोषण वैश्विक GDP का मात्र 0.25% है, जो प्रकृति और आर्द्धभूमियों में निवेश की भारी कमी दर्शाता है।

सिफारिशें

- वित्तपोषण:** आर्द्धभूमियों को केएम-जीबीएफ जैसे वित्तीय तंत्रों में शामिल किया जाना चाहिए, जो प्रत्येक वर्ष अरबों डॉलर जुटाने का लक्ष्य रखते हैं।
 - सार्वजनिक व निजी वित्तीय संसाधनों का समावेश कर आर्द्धभूमियों को प्रकृति-आधारित समाधान के रूप में विकसित किया जाए।

- आउटलुक तत्काल कार्रवाई का आह्वान करता है — जिसमें नीति निर्माताओं, व्यवसायों और समाज की भागीदारी आवश्यक है।
- इसके लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, जन समर्थन एवं पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होगी।

कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचा (GBF)

- इसे जैव विविधता कन्वेशन के COP15 द्वारा 2022 में अपनाया गया था।
- इसे “प्रकृति के लिए पेरिस समझौता” के रूप में प्रचारित किया गया है।
- इसमें 4 वैश्विक लक्ष्य और 23 लक्ष्य शामिल हैं —
 - 2030 तक प्राप्त किए जाने वाले तेर्झस लक्ष्यों में आक्रामक प्रजातियों के प्रवेश को आधा करना और हानिकारक सब्सिडी में प्रति वर्ष 500 अरब डॉलर की कमी करना शामिल है।
 - “लक्ष्य 3” को विशेष रूप से “30X30” लक्ष्य कहा जाता है।
- ‘30X30’ लक्ष्य**
 - इसके अंतर्गत वर्ष 2030 तक 30% भूमि और 30% तटीय और समुद्री क्षेत्रों की रक्षा की प्रतिबद्धता है।
 - साथ ही दशक के अंत तक 30% खराब हुई भूमि और जल क्षेत्रों को पुनः पुनाशर्तापित करने की आकांक्षा है (पहले यह लक्ष्य 20% था)।
 - विश्व जैव विविधता वाले क्षेत्रों की क्षति को 2030 तक “लगभग शून्य” करने का प्रयास करेगी।

वेटलैंड क्या है?

- एक वेटलैंड वह पारिस्थितिक तंत्र होता है जहाँ भूमि — स्वच्छ या लवणीय जल द्वारा — आंशिक रूप से या पूर्णतः, मौसमी या स्थायी रूप से ढकी होती है।
- यह स्वयं में विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में कार्य करता है।
- इसमें झीलें, नदियाँ, भूमिगत जल स्रोत, दलदल, नम घासभूमियाँ, पीटलैंड्स, डेल्टा, टाइडल फ्लैट्स, मैन्योव, कोरल रीफ्स और अन्य तटीय क्षेत्र शामिल होते हैं।

- इन्हें तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है: आंतरिक आर्द्धभूमियां, तटीय आर्द्धभूमियां और मानव निर्मित आर्द्धभूमियां।

भारत में आर्द्धभूमियां

- भारत में हिमालय की उच्च ऊंचाई वाले आर्द्धभूमियां, गंगा व ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों की बाढ़भूमियां, तटीय लैगून व मैन्योव दलदल और समुद्री रीफ्स शामिल हैं।
- भारत के भू-भाग का लगभग 4.6% आर्द्धभूमियां हैं।
- भारत के 91 वेटलैंड्स अंतरराष्ट्रीय महत्व की सूची में दर्ज हैं।
- भारत दक्षिण एशिया में प्रथम और एशिया में तृतीय स्थान पर है।

आर्द्धभूमियां का महत्व

- जैव विविधता केंद्र:** पृथ्वी पर सर्वाधिक जैव विविध पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक।
- जल शुद्धिकरण:** जल से प्रदूषकों व अवसादों को हटाने का कार्य करते हैं।
- बाढ़ नियंत्रण:** अत्यधिक वर्षा के समय अतिरिक्त जल को अवशोषित कर प्राकृतिक बफर का कार्य करते हैं।
- कार्बन संचित करना:** गीले वातावरण के कारण जैव पदार्थों का विघटन धीमा होता है जिससे मृदा में कार्बन जमा होता है।
- आर्थिक लाभ:** मछलीपालन, कृषि, पर्यटन आदि गतिविधियों में सहायता कर स्थानीय समुदायों और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं।

रामसर कन्वेंशन

- यह आर्द्धभूमियों को संरक्षित करने हेतु अंतरराष्ट्रीय संधि है, जिसे 1971 में रैमसर, ईरान में अपनाया गया और 1975 में लागू हुआ।
- संधि से जुड़ी देशों को अपनी सीमाओं में अंतरराष्ट्रीय महत्व वाली आर्द्धभूमियों को नामित करना होता है — जिन्हें रामसर साइट्स कहते हैं।

नामांकन के मानदंड

- यदि वह संवेदनशील, संकटग्रस्त या गंभीर संकटग्रस्त प्रजातियों अथवा

- संकटग्रस्त पारिस्थितिक समुदायों का समर्थन करता हो अथवा
- नियमित रूप से 20,000 से अधिक जल पक्षियों का समर्थन करता हो अथवा
- मछलियों के लिए भोजन स्रोत, प्रजनन स्थल और नर्सरी के रूप में कार्य करता हो।
- भारत 1982 से इस कन्वेंशन का सदस्य है।

Source: [DTE](#)

भारत और UAE: परमाणु ऊर्जा और उन्नत प्रौद्योगिकी सहयोग

संदर्भ

- भारत और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) अपनी रणनीतिक साझेदारी का तीव्रता से विस्तार कर रहे हैं, जो पारंपरिक व्यापार संबंधों से ऊर्जा, नवाचार और सतत विकास के भविष्य-केंद्रित सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

भारत-UAE रणनीतिक साझेदारी के बारे में

- आर्थिक उपलब्धियाँ और व्यापार एकीकरण**
 - द्विपक्षीय व्यापार:** \$100 बिलियन से अधिक (लक्ष्य से पाँच वर्ष पहले प्राप्त); भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार (चीन और अमेरिका के बाद); इसका श्रेय व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) को है, जिसमें वर्चुअल ट्रेड कॉरिडोर शामिल है — भारत-मध्यपूर्व-यूरोप आर्थिक कॉरिडोर (IMEEC) का मुख्य स्तंभ।
 - निवेश का प्रगति:** UAE के भारत में निवेश \$23 बिलियन तक पहुँच गए हैं, जिसमें केवल 2024 में \$4.5 बिलियन की प्रतिबद्धता शामिल है।
 - 2023 में अंतिम रूप दिए गए द्विपक्षीय निवेश संधि ने पूंजी प्रवाह की वृद्धि के लिए स्थिर कानूनी ढांचा प्रदान किया है।
 - जयवान कार्ड:** UAE का राष्ट्रीय भुगतान कार्ड भारत की रूपे कार्ड स्टैक पर आधारित है।
 - UPI-Aani एकीकरण:** नवंबर 2025 में निर्धारित — सीमा पार डिजिटल भुगतान और केंद्रीय बैंक

- डिजिटल मुद्रा (CBDC) इंटरऑपरेबिलिटी को सक्षम बनाना।
- प्रौद्योगिकी और रक्षा सहयोग
 - नाभिकीय ऊर्जा का विकास:** UAE वर्तमान में अपनी 25% विद्युत नाभिकीय ऊर्जा (5.6 GW) से प्राप्त करता है और 2030 तक इसकी क्षमता दोगुना करने का लक्ष्य है।
 - अमेरिका, UAE और भारत के बीच “Partnership for Accelerating Clean Energy (PACE)” और फ्रांस के साथ सहयोग के माध्यम से नाभिकीय ऊर्जा को स्वच्छ ऊर्जा सहयोग के स्तंभ में परिवर्तित किया जा रहा है।
 - भारत की भागीदारी बाराकाह नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र में — अरब जगत की पहली बहु-इकाई सुविधा — UAE द्वारा भारत की परमाणु विशेषज्ञता में विश्वास को दर्शाता है।
 - रक्षा सहभागिता:** “Desert Cyclone”, “Desert Flag”, और भारत-फ्रांस-UAE त्रिपक्षीय अभ्यास जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यासों के माध्यम से रक्षा सहयोग सचिव स्तर तक पहुँच चुका है।
 - भारतीय कंपनियाँ IDEX और दुर्बई एयरशो जैसे प्रमुख रक्षा एक्सपो में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं — तेजस फाइटर के पुर्जों और ड्रोन प्रणालियों जैसे परियोजनाओं में योगदान दे रही हैं।
 - शिक्षा, अंतरिक्ष और महत्वपूर्ण खनिज
 - IIT अबू धाबी के पीएचडी कार्यक्रम, IIM अहमदाबाद का दुर्बई कैंपस और IIFT दुर्बई की शुरुआत से शैक्षणिक सहयोग को बल मिला है — मानव पूंजी विकास को द्विपक्षीय लक्ष्यों से जोड़ते हुए।
 - अंतरिक्ष सहयोग:** स्टीक चिकित्सा एवं अंतरिक्ष अन्वेषण में सहयोग जारी है — भारत की मानव संसाधन विशेषज्ञता और UAE की तकनीकी अवसंरचना को मिलाते हुए।
 - महत्वपूर्ण खनिज: 2024 में समझौता ज्ञापन (MoU) के तहत लिथियम, कोबाल्ट और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की सुरक्षा के प्रयास।
 - हरित हाइड्रोजन: एक ट्रांसनेशनल मूल्य श्रृंखला का निर्माण — 2030 तक भारत का लक्ष्य 5 MMT और UAE का लक्ष्य 1.4 MMT उत्पादन।
 - संपर्क और स्वच्छ ऊर्जा कॉरिडोर
 - IMEEC पहल:** कंटेनरों, डेटा और ऊर्जा की निर्बाध प्रवाह के लिए पारस्परिक ग्रिड और सबसी केबल्स के माध्यम से संपर्क योजना।
 - I2U2 (भारत, इजराइल, UAE, अमेरिका) पहल:** गुजरात में फूड पार्क और गुजरात तथा राजस्थान में 60 GW के नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं की योजना।
 - भू-राजनीतिक स्थिति और अफ्रीका तक पहुँच
 - UAE के वैश्विक CEPA नेटवर्क का लाभ:** UAE के 25 अन्य CEPA समझौतों का उपयोग करते हुए ऊर्जा-केंद्रित उद्योगों के लिए वैश्विक पहुँच और उत्पादन क्षमता को बढ़ाना।
 - अफ्रीका — अगला रणनीतिक क्षेत्र:** UAE की BRICS में प्रवेश और भारत-अफ्रीका सेतु जैसी पहल भारत के लिए अफ्रीकी बाजारों तक पहुँच का रणनीतिक मार्ग प्रदान करती है, जिसमें UAE एक महत्वपूर्ण द्वार बनता है।
 - सांस्कृतिक प्रतीक:** अबू धाबी का BAPS हिंदू मंदिर धार्मिक सहिष्णुता और साझा मूल्यों का शक्तिशाली प्रतीक बनकर भारत-UAE संबंधों की सांस्कृतिक गहराई को मुद्रू करता है।
- चिंताएँ और चुनौतियाँ**
- भू-राजनीतिक संवेदनशीलताएँ:** इजराइल-गाजा तनाव के बीच भारत का संतुलन और वेस्ट एशिया में UAE की बदलती स्थिति कूटनीतिक चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं।
 - व्यापार और आर्थिक चिंताएँ:** CEPA की सफलता के बावजूद व्यापार कुछ क्षेत्रों जैसे रत्न और पेट्रोलियम

तक सीमित है — तकनीक, फार्मा और नवीकरणीय ऊर्जा में विविधता लाना अभी शेष है।

- **नियामकीय खामियाँ और अनियमितताएँ:** आर्थिक साझेदारी समझौते में एक कमी के कारण व्यापारियों ने सोने को प्लेटिनम मिश्रधातु के रूप में आयात किया — ₹1,700 करोड़ का राजस्व घाटा हुआ।
 - ▲ UAE से चांदी का आयात एक वर्ष में 647 गुना बढ़ गया — जिससे वैल्यू-एड अनुपालन और GIFT सिटी के ढीले नियमों के दुरुपयोग पर चिंताएँ हैं।
- **श्रम अधिकार और मानवीय मुद्दे:** UAE में प्रवासी भारतीय श्रमिकों को “कफाला” प्रणाली के अंतर्गत पासपोर्ट जब्ती, वेतन में देरी और खराब जीवन स्थितियों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- **रणनीतिक और सुरक्षा चुनौतियाँ:** UAE और चीन के रक्षा समझौतों सहित बढ़ते संबंध भारत की रणनीतिक गणना को जटिल बना सकते हैं।
 - ▲ पाकिस्तान को UAE द्वारा दिया गया वित्तीय समर्थन भारत-विरोधी गतिविधियों की आशंका को उत्पन्न करता है।
 - **कूटनीतिक और संस्थागत अंतराल:** भारत और UAE के बीच रक्षा और राजनीतिक मुद्दों पर समग्र चर्चा के लिए कोई समर्पित संवाद मंच (जैसे 2+2 वार्ता) नहीं है।
 - ▲ भारतीय निर्यातकों को हरे मांस प्रमाणन जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है — जिससे प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात प्रभावित होता है।

निष्कर्ष

- भारत-UAE की उभरती रणनीतिक साझेदारी यह दर्शाती है कि कैसे दो पूरक अर्थव्यवस्थाएँ लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण कर सकती हैं, सतत विकास को गति दे सकती हैं और परमाणु और उन्नत प्रौद्योगिकियों में सहयोग का नेतृत्व कर सकती हैं।
- साझा दृष्टिकोण और समन्वित नीतियों के साथ, दोनों देश तीव्रता से परिवर्तनशील विश्व में वैश्विक नवाचार एवं व्यापार केंद्र के रूप में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर रहे हैं।

Source: DD News

भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों के विरुद्ध अपराधों के लिए जवाबदेही का आह्वान दोहराया

समाचार में

- हाल ही में भारत ने “शांति सैनिकों के विरुद्ध अपराधों की जवाबदेही के लिए मित्र देशों के समूह” की एक उच्च स्तरीय बैठक की सह-अध्यक्षता की।

क्या आप जानते हैं?

- “शांति सैनिकों के विरुद्ध अपराधों की जवाबदेही के लिए मित्र देशों का समूह” दिसंबर 2022 में भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता के दौरान शुरू किया गया था, जिसका आधार प्रस्ताव 2589 था।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना का इतिहास

- संयुक्त राष्ट्र शांति सेना, वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक प्रमुख तंत्र है।
 - ▲ संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षक, जिन्हें ब्लू हेलमेट के नाम से जाना जाता है, का नाम संयुक्त राष्ट्र के ध्वज के हल्के नीले रंग से लिया गया है। 1947 में, संयुक्त राष्ट्र ने इस रंग को इसलिए चुना क्योंकि नीला रंग शांति का प्रतीक है, जबकि लाल रंग प्रायः युद्ध से जुड़ा होता है। यह हल्का नीला रंग तब से संयुक्त राष्ट्र का प्रतीक बन गया है।
- यह संघर्ष निवारण, शांति स्थापना, शांति प्रवर्तन और शांति निर्माण सहित संयुक्त राष्ट्र के अन्य प्रयासों के साथ-साथ कार्य करता है।



संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना क्या है?

- यह वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाई गई एक प्रमुख प्रणाली है।
- शांति सैनिकों को ‘ब्लू हेलमेट्स’ के नाम से जाना जाता है — जो संयुक्त राष्ट्र के इंडे के हल्के नीले रंग से प्रेरित है।
- 1947 में इस रंग को शांति का प्रतीक माना गया था, जबकि लाल रंग को युद्ध से जोड़ा जाता है। तब से यह रंग संयुक्त राष्ट्र की पहचान बन गया है।
- यह प्रणाली अन्य संयुक्त राष्ट्र प्रयासों जैसे संघर्ष रोकथाम, शांति स्थापना, शांति प्रवर्तन और शांति निर्माण के साथ मिलकर कार्य करती है।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान

- भारत की UN शांति स्थापना में सेवा देने की गौवशाली और दीर्घकालिक परंपरा है, जिसकी शुरुआत 1953 में कोरिया में UN ऑपरेशन में भाग लेने से हुई।
- भारत की अहिंसा की प्रतिबद्धता, जो महात्मा गांधी द्वारा प्रचारित और भारतीय दर्शन में निहित है, वैश्विक शांति को बढ़ावा देने के UN दृष्टिकोण से सामंजस्यशील है।
 - यह प्रतिबद्धता भारत के प्राचीन सिद्धांत ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) से उत्पन्न होती है — जो मानवता की परस्पर संबद्धता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को महत्व देता है।
- 1950 के दशक से भारत ने विश्वभर में 50 से अधिक मिशनों में 2,90,000 से अधिक शांति सैनिक भेजे हैं — इसे UN शांति स्थापना में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बनाते हुए।
- वर्तमान में भारत के 5,000 से अधिक सैनिक 11 सक्रिय मिशनों में से नौ में सेवा दे रहे हैं — वे दुर्गम और संघर्षशील क्षेत्रों में वैश्विक शांति और सुरक्षा की रक्षा के लिए कार्यरत हैं।
- 2023 में संयुक्त राष्ट्र ने भारत को अपनी सर्वोच्च शांति स्थापना सम्मान ‘डैग हैमरस्कोल्ड मेडल’ से सम्मानित किया — इसे भारतीय शांति सैनिक शिशुपाल सिंह और सानवाला राम विश्वोई तथा UN कर्मचारी शाबेर ताहिर अली को मरणोपरांत डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो में उनके बलिदान के लिए प्रदान किया गया।

क्या आप जानते हैं?

- UN के 70,000 वर्दीधारी शांति सैनिकों में महिलाएँ अभी भी 10% से कम हैं — इनमें सैन्यकर्मी, पुलिस अधिकारी और पर्यवेक्षक सम्मिलित हैं।
- UN ने ‘समान लैंगिक समानता रणनीति’ के अंतर्गत महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं — 2028 तक सैन्य टुकड़ियों में 15% महिलाएँ और पुलिस इकाइयों में 25% महिलाएँ शामिल करना।
- भारत ने 2007 में लाइबेरिया में प्रथम “ऑल-फीमेल फॉर्म्ड पुलिस यूनिट (FPU)” तैनात की थी।
- फरवरी 2025 तक भारत इस विरासत को जारी रखते हुए डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो, दक्षिण सूडान, लेबनान, गोलान हाइट्स, पश्चिमी सहारा और एबाई जैसे छह प्रमुख मिशनों में 150 से अधिक महिला शांति सैनिक तैनात किए हुए हैं।

मुद्दे और चिंताएँ

- UN शांति सैनिकों को हिंसा का सामना करना पड़ता है — वे खतरे वाले क्षेत्रों में गंभीर जोखिम उठाकर सेवा देते हैं, फिर भी उनके विरुद्ध अपराधों को अधिकांशतः दंड नहीं मिलता।
- इस जवाबदेही की कमी अंतरराष्ट्रीय शांति प्रयासों को कमजोर करती है।
- UN डेटा के अनुसार, 1948 से अब तक 1,000 से अधिक शांति सैनिकों की हिंसात्मक घटनाओं में मृत्यु हुई है।
- भारत, जो UN मिशनों का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, ने 3,00,000 से अधिक सैनिक तैनात किए हैं, जिनमें से 182 ने सेवा के दौरान बलिदान दिया है।

आगे की राह

- संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत की भूमिका वैश्विक शांति, सुरक्षा और बहुपक्षवाद के प्रति उसकी मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- हाल ही में भारत ने UN शांति सैनिकों के विरुद्ध हुए अपराधों के लिए न्याय सुनिश्चित करने की अपनी

- प्रतिबद्धता को दोहराया है — उसने इसे वैश्विक शांति स्थापना मिशनों की सफलता के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता कहा है।
- सदस्य देशों ने सहमति व्यक्त की है, कि जवाबदेही सुनिश्चित करना शांति अभियानों की सुरक्षा और विश्वसनीयता के लिए अनिवार्य है।

Source :BS

केरल: भारत में जैव विविधता खोज का शीर्ष केंद्र

संदर्भ

- केरल ने भारत के जैव विविधता दस्तावेजीकरण के लिए एक रिकॉर्ड तोड़ने वाले वर्ष में, नए जीव-जंतुओं की खोज के लिए देश के अग्रणी राज्य के रूप में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है।

मुख्य निष्कर्ष

- भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI) की 'पशु खोजें: नई प्रजातियाँ और नए रिकॉर्ड 2024 रिपोर्ट' के अनुसार, 2024 में पूरे भारत में 683 प्रजातियाँ एवं उप-प्रजातियाँ खोजी गईं (2023 में 641)।
 - 2008 में औपचारिक दस्तावेजीकरण शुरू होने के बाद से यह किसी एक वर्ष में अब तक की सबसे अधिक संख्या है।
 - इनमें से 459 वैश्विक स्तर पर नई हैं, जबकि 224 भारत के लिए नए रिकॉर्ड हैं।
- केरल में 101 प्रजातियाँ पाई गईं - जिनमें विज्ञान के लिए 80 नई और भारत में 21 नई दर्ज की गईं; इसके बाद कर्नाटक (82), अरुणाचल प्रदेश (72) एवं तमिलनाडु (63) का स्थान है।
- अरुणाचल प्रदेश में 72 खोजें दर्ज की गईं, मेघालय में 42, जबकि पश्चिम बंगाल में 56 खोजें दर्ज की गईं।

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, जिसे लंबे समय से स्थानिक वन्यजीवों का उद्भव स्थल माना जाता है, ने राष्ट्रीय रजिस्टर में 43 नई जीव-जंतुओं की प्रविष्टियाँ दर्ज कीं, जिनमें 14 नई प्रजातियाँ और 29 नए रिकॉर्ड शामिल हैं।

अन्य उल्लेखनीय खोजें

- हिमाचल प्रदेश से एक साँप प्रजाति जिसका नाम एंगुइकुलस डिकैप्रियोई है, अभिनेता एवं पर्यावरणविद् लियोनार्डो डिकैप्रियो को जलवायु और जैव विविधता के मुद्दों पर उनकी वकालत के लिए सम्मानित करते हुए।
- अन्य सरीसृप विज्ञान संबंधी विशेषताओं में दो नए वंश; 37 सरीसृप प्रजातियाँ; और पाँच उभयचर शामिल हैं, जिनमें से एक नए वंश का प्रतिनिधित्व करता है।

बोटैनिकल(फ्लोरा)

- भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (BSI) ने 433 नए पादप वर्ग (क्लासा) की खोज की सूचना दी है, जिसमें केरल 58 खोजों के साथ फिर से सबसे आगे है। इनमें 154 आवृतबीजी, 63 लाइकेन, 156 कवक, 32 शैवाल और 9 सूक्ष्मजीव प्रजातियाँ शामिल हैं।
- भारत में अब कुल प्रलेखित पादप प्रजातियों की संख्या 56,177 हो गई है, जो इसे वैश्विक जैव विविधता के भंडार के रूप में स्थापित करती है।

केरल क्यों अलग है?

- केरल के समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र—पश्चिमी घाट से लेकर तटीय आर्द्रभूमि और उष्णकटिबंधीय वर्षावनों तक—इसे जैव विविधता अनुसंधान के लिए एक प्रमुख स्थान बनाते हैं। राज्य की सफलता का श्रेय निम्नलिखित को जाता है:
 - लक्षित क्षेत्र सर्वेक्षण;
 - डीएनए बारकोडिंग जैसी उन्नत आणविक तकनीकें;
 - ZSI वैज्ञानिकों द्वारा व्यवस्थित वर्गीकरण प्रयास

भारत में जैव विविधता हॉटस्पॉट

- भारत, विश्व के 17 महाविविध देशों में से एक, चार विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त जैव विविधता हॉटस्पॉट का घर है, जिनमें से प्रत्येक स्थानिक प्रजातियों से भरा हुआ है और गंभीर पारिस्थितिक खतरों का सामना कर रहा है।
- नॉर्मन मायर्स द्वारा प्रस्तुत और कंजर्वेशन इंटरनेशनल द्वारा परिष्कृत यह अवधारणा, अपनी समृद्ध जैव विविधता एवं संवेदनशीलता के कारण उच्च संरक्षण प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करती है। इसके लिए किसी क्षेत्र में निम्नलिखित होना आवश्यक है:
 - कम से कम 1,500 स्थानिक संवहनी पादप प्रजातियाँ;
 - अपनी मूल प्राकृतिक वनस्पति का 70% या उससे अधिक हिस्सा खो दिया हो;

भारत में चार जैव विविधता हॉटस्पॉट

- हिमालय:** जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम
 - हिम तेंदुआ, लाल पांडा, हिमालयी ताहर, रोडोडेंड्रोन वन
- भारत-बर्मा:** पूर्वोत्तर भारत (सिक्किम को छोड़कर), अंडमान द्वीप समूह
 - हूलॉक गिब्बन, सुनहरा लंगूर, धूमिल तेंदुआ, ऑर्किड
- पश्चिमी घाट:** केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात
 - शेर-पूँछ वाला मकाक, नीलगिरि ताहर, मालाबार सिवेट

सुंदरालैंड: निकोबार द्वीप समूह

- निकोबार मेगापोड, लवणीय जल का मगरमच्छ, प्रवाल भित्तियाँ

ये हॉटस्पॉट क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- उच्च स्थानिकता:** इन क्षेत्रों में ऐसी प्रजातियाँ पाई जाती हैं जो पृथ्वी पर और कहीं नहीं पाई जातीं।
- पारिस्थितिक सेवाएँ:** ये जल चक्रों को नियंत्रित करती हैं, मृदा अपरदन को रोकती हैं और जलवायु की चरम स्थितियों को कम करती हैं।
- सांस्कृतिक महत्व:** मूलनिवासी समुदाय आजीविका और विरासत के लिए इन पारिस्थितिक तंत्रों पर निर्भर हैं।
- वैश्विक संरक्षण प्राथमिकता:** पृथ्वी की भूमि के केवल 2.3% हिस्से को कवर करने के बावजूद, ये हॉटस्पॉट 50% से अधिक स्थानिक पादप प्रजातियों का पोषण करते हैं।

भारत के जैव विविधता हॉटस्पॉट के लिए खतरे

- वनों की कटाई और आवास विखंडन;
- जलवायु परिवर्तन और हिमनदों का पिघलना;
- अवैध शिकार और अवैध वन्यजीव व्यापार;
- बुनियादी ढाँचे का विकास और खनन;
- आक्रामक प्रजातियाँ और कृषि विस्तार

संरक्षण प्रयास

- संरक्षित क्षेत्र:** राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य और जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र
- कानून:** वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (1972), जैव विविधता अधिनियम (2002)
- समुदाय-आधारित संरक्षण:** पवित्र उपवन, संयुक्त वन प्रबंधन
- वैश्विक प्रतिबद्धताएँ:** जैव विविधता पर अभिसमय, सतत विकास लक्ष्य 15 (भूमि पर जीवन)

Source: DTE

संक्षिप्त समाचार

INS निस्तार: प्रथम स्वदेशी गोताखोरी सहायता पोत

समाचार में

- INS निस्तार को 18 जुलाई 2025 को विशाखापट्टनम में रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ की उपस्थिति में भारतीय नौसेना में समिलित किया गया।

INS निस्तार

- मूल INS निस्तार एक पनडुब्बी बचाव पोत था जिसे भारतीय नौसेना ने तत्कालीन सोवियत संघ से 1969 में प्राप्त किया और 1971 में सेवा में शामिल किया।



- यह 1989 तक सेवा में रहा और उस दौरान नौसेना के गोताखोरी एवं पनडुब्बी बचाव अभियानों का मुख्य केंद्र बना रहा।
- नया INS निस्तार 80% से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ निर्मित हुआ है, जिसमें लगभग 120 MSMEs का योगदान है।

- यह भारत द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित किया गया प्रथम “गोताखोरी सहायता पोत” (DSV) है।
- यह पोत हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा बनाए जा रहे दो DSV में से प्रथम है।
- यह पोत जटिल गहराई वाले “सैचुरेशन डाइविंग” और बचाव अभियानों को अंजाम देने के लिए डिजाइन किया गया है — यह क्षमता विश्व की कुछ चुनिंदा नौसेनाओं के पास है।
- इसमें अत्याधुनिक गोताखोरी उपकरण लगे हैं जैसे:
 - रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल्स (ROVs)
 - सेल्फ-प्रोपेल्ड हाइपरबैरिक लाइफ बोट
 - डाइविंग कंप्रेशन चैंबर्स
- यह 300 मीटर की गहराई तक गोताखोरी और पुनःप्राप्ति (salvage) कार्य कर सकता है।
- यह गहराई में फंसी पनडुब्बी से कर्मियों को बचाने और निकालने के लिए “मदर शिप (Mother Ship)” के रूप में भी कार्य करेगा।
- यह 118 मीटर लंबा पोत है, जिसकी विस्थापन क्षमता 10,000 टन से अधिक है।
- इसमें 15 टन की सबसी क्रेन है, हेलीकॉप्टर संचालन की सुविधा है, और चिकित्सा सुविधाओं में ऑपरेशन थिएटर, ICU एवं आठ-बेड वाला अस्पताल शामिल है — जो हाइपरबैरिक क्षमताओं से सुसज्जित है, जिससे यह अपने विशिष्ट परिचालन उद्देश्यों को पूरा कर सकता है।

महत्व

- INS निस्तार की कमीशनिंग भारतीय नौसेना की भूमिका को क्षेत्र में ‘प्रथम उत्तरदाता’ और ‘पसंदीदा सुरक्षा भागीदार’ के रूप में दृढ़ता से स्थापित करती है।
- स्वदेशी जहाज निर्माण उद्योग सरकार के ‘आत्मनिर्भर भारत’ अभियान के प्रमुख स्तंभों में से एक रहा है।
- वर्तमान में, पाइपलाइन में उपस्थित सभी 57 नए युद्धपोत स्वदेशी रूप से बनाए जा रहे हैं।

Source :IE

हिंदू कुश हिमालय

समाचार में

- अंतर्राष्ट्रीय समेकित पर्वतीय विकास केंद्र (ICIMOD) के अनुसार, हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के कारण हिमनदी झील विस्फोट बाढ़ (GLOF) की घटनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है।

क्या आप जानते हैं?

- हिमनदी झील विस्फोट बाढ़ (GLOF) तब होती है जब किसी हिमखंड द्वारा पोषित झील से अचानक जल बाहर निकलता है।
 - इन बाढ़ों का मुख्य कारण बढ़ता तापमान होता है।
- GLOF घटनाएं हाल में बनी गतिशील “सुप्राग्लेशियल झीलों” से जुड़ी होती हैं।
 - सुप्राग्लेशियल झीलें हिमनदों की सतह पर बनती हैं, विशेष रूप से मलबे से ढके क्षेत्रों में।
 - ये पहले छोटे-छोटे पिघले हुए पानी के तालाबों के रूप में उत्पन्न होती हैं, और धीरे-धीरे फैलकर आपस में मिल जाती हैं, जिससे बड़ी और अत्यंत गतिशील झीलों का निर्माण होता है।
 - इन झीलों का पता लगाना बेहद कठिन होता है।

हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र

- यह क्षेत्र एशिया में 3,500 किलोमीटर तक फैला है आठ देशों — अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, भारत, म्यांमार, नेपाल एवं पाकिस्तान — में विस्तृत है।
- यह दस प्रमुख एशियाई नदी प्रणालियों का स्रोत है: अमूदरिया, सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र (यारलुंग सांगपो), इरावदी, सालवीन (नू), मेकोंग (लानचांग), यांग्से (जिन्शा), येलो रिवर (हुआन्ये), और तारिम (डायन)।
- इस क्षेत्र पर दो अरब से अधिक लोग खाद्य, जल और ऊर्जा सुरक्षा के लिए निर्भर हैं।
- यह क्षेत्र कई अपूरणीय प्रजातियों का निवास स्थान भी है।

क्या आप जानते हैं?

- अंतर्राष्ट्रीय समेकित पर्वतीय विकास केंद्र (ICIMOD) एक अंतर-सरकारी ज्ञान और अधिगम केंद्र है, जो हिंदू कुश हिमालय (HKH) क्षेत्र के लोगों के लिए कार्य करता है।
- इसका मुख्यालय काठमांडू, नेपाल में स्थित है।

Regional member countries



Source :DTE

लायन-टेल्ड मैकाक

समाचार में

- राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) की स्थायी समिति ने शरावती वैली लायन-टेल्ड मैकाक वन्यजीव अभ्यारण्य में 142.76 हेक्टेयर वन भूमि को शरावती पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट (2,000 मेगावॉट) के लिए प्रयोग करने की सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

शरावती वैली लायन-टेल्ड मैकाक वन्यजीव अभ्यारण्य

- यह कर्नाटक के पश्चिमी घाट क्षेत्र में स्थित है।
- यहां लगभग 700 लायन-टेल्ड मैकाक निवास करते हैं — किसी भी संरक्षित क्षेत्र में इस संकटग्रस्त प्रजाति की सबसे अधिक संख्या है।

लायन-टेल्ड मैकाक (Macaca silenus)

- यह दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट की एक पहचान योग्य बंदर प्रजाति है, चांदी जैसी सफेद अयाल (mane) इसकी विशेषता है।
- यह पूरी तरह से पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में पाया जाता है।

जनसंख्या

- IUCN के अनुसार, केवल लगभग 2,500 वयस्क ही जंगलों में बचे हैं और इनकी संख्या लगातार घट रही है।

आवास और वितरण

- यह मुख्यतः वृक्षों पर रहने वाला (arboreal) जीव है और सदाबहार वर्षावनों की ऊपरी छतरी (canopy) को पसंद करता है।
- यह मानसूनी जंगलों और थोड़े क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में भी रह सकता है।
- यह ऐसे क्षेत्रों में भी जीवित रह सकता है जहां मनुष्य द्वारा जैकफ्रूट और अमरुद जैसे फलदार पेड़ लगाए गए हों, हालांकि इनकी संख्या फलों की उपलब्धता पर निर्भर करती है।

खतरे

- इसके अस्तित्व को आवास की हानि, विखंडन और मानव अतिक्रमण से खतरा है।

संरक्षण स्थिति

- यह IUCN की रेड लिस्ट में संकटग्रस्त प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध है।
- यह CITES के अनुच्छेद I में संरक्षित है।

Source :DTE

सिम्बेक्स अभ्यास

समाचार में

- भारतीय नौसेना सिंगापुर-भारत समुद्री द्विपक्षीय अभ्यास (SIMBEX) के 32वें संस्करण में भाग लेने जा रही है।

SIMBEX अभ्यास

- यह 1994 में 'एक्सरसाइज लायन किंग' के रूप में शुरू हुआ था और भारत के लिए सबसे लंबे समय तक अनवरत रूप से चलने वाले समुद्री अभ्यासों में से एक है।
- इसका आयोजन प्रतिवर्ष भारतीय नौसेना और रिपब्लिक ऑफ सिंगापुर नेवी (RSN) द्वारा किया जाता है।

महत्व

- यह अभ्यास भारतीय नौसेना और रिपब्लिक ऑफ सिंगापुर नेवी (RSN) के बीच सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समुद्री सहयोगों में से एक में बदल गया है।
- यह अभ्यास भारत की 'विजन सागर और 'एक्ट ईस्ट' नीति का समर्थन करता है, जो क्षेत्रीय सहयोग एवं समुद्री सुरक्षा पर केंद्रित है।

Source :Air

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सेनेगल को ट्रेकोमा मुक्त घोषित

संदर्भ

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा सेनेगल को ट्रेकोमा से मुक्त घोषित किया गया है, जो एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य उपलब्धि है।

क्या आप जानते हैं?

- सेनेगल अफ्रीका के पश्चिमी छोर पर अटलांटिक महासागर में स्थित है और अफ्रीका, यूरोप एवं अमेरिका महाद्वीपों से घिरा हुआ है।
- यह उत्तर में मौरिटानिया, पूर्व में माली, दक्षिण में गिनी और गिनी-बिसाउ, तथा पश्चिम में 550 किमी लंबे अटलांटिक महासागर के तट से सीमित है।
- इसकी राजधानी डकार एक प्रायद्वीप है जो पश्चिमी छोर पर स्थित है।

जानकारी

- ट्रेकोमा सेनेगल में समाप्त की जाने वाली दूसरी उपेक्षित उष्णकटिबंधीय बीमारी (NTD) है, इससे पहले 2004 में गिनी-कूमि रोग (ड्राकुनकुलियासिस) को समाप्त किया गया था।
- सेनेगल ट्रेकोमा को सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में समाप्त करने वाला विश्व का 25वां और अफ्रीका का 9वां देश बन गया है।
- अन्य 24 देशों में भारत, नेपाल, पाकिस्तान और चीन भी शामिल हैं।

ट्रैकोमा

- ट्रैकोमा आंखों का एक अत्यधिक संक्रामक जीवाणु संक्रमण है, जो क्लैमाइडिया ट्रैकोमैटिस नामक बैक्टीरिया से होता है।
- यह विश्वभर में रोके जा सकने वाली अंधेपन का एक प्रमुख कारण रहा है।
- ट्रैकोमा से होने वाली अंधता को उलटना बेहद कठिन होता है।
- ट्रैकोमा अब भी विश्व के कुछ सबसे गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों — अफ्रिका, एशिया, मध्य एवं दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा मध्य पूर्व — में अत्यधिक व्यापक है।

Source: DTE

सामुदायिक कुत्तों के पोषण की व्यवस्था करना

संदर्भ

- सर्वोच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी की कि जो नागरिक सामुदायिक कुत्तों के पोषण की व्यवस्था करना चाहते हैं, उन्हें यह अपने घर के अंदर करने पर विचार करना चाहिए।

एनिमल बर्थ कंट्रोल (कुत्ता) नियम

- सरकार ने 2023 में एनिमल बर्थ कंट्रोल नियम अधिसूचित किए हैं, जो प्रीवेंशन ऑफ क्रुएलटी टू एनिमल एक्ट, 1960 के अंतर्गत आते हैं और 2001 के पुराने नियमों को निरस्त करते हैं।
- उद्देश्य: सामुदायिक कुत्तों की संख्या को नसबंदी के माध्यम से नियंत्रित करना और उन्हें टीका लगाकर रेबीज के प्रसार को रोकना।

मुख्य प्रावधान

- “आवारा कुत्तों” की जगह “सामुदायिक पशु” शब्द का प्रयोग किया गया है — यह मान्यता देता है कि ये कुत्ते मालिकविहीन नहीं बल्कि क्षेत्रीय जीव हैं।
- नसबंदी और टीकाकरण कार्यक्रम स्थानीय निकायों/नगरपालिकाओं/नगर निगमों और पंचायतों द्वारा संचालित किए जाएंगे।

- नगर निगमों को ABC और एंटी-रेबीज कार्यक्रम को संयुक्त रूप से लागू करना होगा।
- मानव और सामुदायिक कुत्तों के बीच संघर्ष को बिना उन्हें स्थानांतरित किए हल करने के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं।
- कुत्तों को खिलाने के लिए ऐसे प्रोटोकॉल तय किए गए हैं जो पशु कल्याण और सार्वजनिक सुरक्षा दोनों का सम्मान करते हैं।

संवैधानिक प्रावधान

- सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान में प्रदत्त जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार (अनुच्छेद 21) को पशुओं तक विस्तारित किया है।
- 2014 के जल्लीकट्टू मामले में कोर्ट ने कहा कि पशु जीवन भी अनुच्छेद 21 के अंतर्गत आता है (भारतीय पशु कल्याण बोर्ड बनाम ए नागराजा)।
- साथ ही, अनुच्छेद 51A(g) नागरिकों पर यह मौलिक कर्तव्य रखता है कि वे “जीवित प्राणियों के प्रति करुणा रखें।”

कुत्तों को खिलाने के नियम

- सामुदायिक पशुओं को खिलाने की व्यवस्था करना रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, अपार्टमेंट ओनर एसोसिएशन या स्थानीय निकाय के प्रतिनिधि की जिम्मेदारी होगी।
- खिलाने की जगहें ऐसी होनी चाहिए जो भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों जैसे सीढ़ियाँ, इमारत के प्रवेश द्वार और बच्चों के खेलने की जगहों से दूर हों।
- निर्धारित स्थानों को स्वच्छ एवं कचरा-मुक्त रखा जाना चाहिए, और कुत्तों को निर्धारित समय पर ही खिलाया जाना चाहिए।
- ये नियम करुणा और सार्वजनिक व्यवस्था के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

Source: IE

कृषि खाद्य प्रणालियों में युवाओं की स्थिति पर रिपोर्ट: FAO

संदर्भ

- हाल ही में खाद्य और कृषि संगठन (FAO) ने अपनी रिपोर्ट 'द स्टेटस ऑफ यूथ इन एग्रीफूड सिस्टम्स' में प्रकटीकरण किया कि कृषि क्षेत्र लाखों युवाओं को रोजगार देने की क्षमता रखता है और वैश्विक GDP में 1.4% की वृद्धि कर सकता है, जिससे \$1.5 ट्रिलियन का अतिरिक्त मूल्य जुड़ सकता है।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष

- युवा बेरोजगारी:** विश्व के 1.3 अरब युवाओं (आयु 15–24 वर्ष) में से 20% से अधिक न तो रोजगार में हैं, न शिक्षा में, और न ही प्रशिक्षण में (NEET)।
 - युवा महिलाएं NEET श्रेणी में आने की दोगुनी संभावना रखती हैं।
- कृषि-खाद्य प्रणालियों की आर्थिक क्षमता:** अनुमानित GDP वृद्धि का 45% हिस्सा सीधे युवाओं की बढ़ी हुई भागीदारी से आएगा।
 - कृषि में रोजगार केवल खेतों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रोसेसिंग, लॉजिस्टिक्स, रिटेल और नवाचार जैसे पूरे मूल्य शृंखला में उपलब्ध है।
 - संकटग्रस्त क्षेत्रों में, 82% तक युवा एग्रीफूड सिस्टम्स पर निर्भर हैं।
- जलवायु और जनसांख्यिकीय दबाव:** 395 मिलियन ग्रामीण युवा ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं जहां कृषि उत्पादकता में गिरावट की आशंका है।
 - युवाओं में खाद्य असुरक्षा 2014–16 में 16.7% से बढ़कर 2021–23 में 24.4% हो गई, विशेष रूप से अफ्रीका में।
 - कृषि-खाद्य प्रणालियों में युवाओं की भागीदारी 2005 में 54% से घटकर 2021 में 44% रह गई।

FAO की तीन-स्तरीय रणनीति

- अधिक जानकारी प्राप्त करें:** डेटा अंतराल को पाटने और युवा-समावेशी नीतियों के लिए साक्ष्य तैयार करने हेतु

- अधिक जानकारी शामिल करें: निर्णय लेने और शासन में युवाओं की आवाज़ को सुदृढ़ करने हेतु
- अधिक निवेश करें: अच्छे रोजगार सृजित करने, भूमि, क्रषि, प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी तक पहुँच में सुधार करने हेतु

कार्यवाई के लिए अनुशंसाएँ

- कृषि-खाद्य प्रणालियों का आधुनिकीकरण:** कृषि को आकर्षक बनाने के लिए बुनियादी ढांचे और नवाचार में निवेश करें।
- प्रवास मार्गों का समर्थन:** श्रम की कमी को दूर करने के लिए सुरक्षित और युवा-उत्तरदायी प्रवासन को सक्षम करें।
- डिजिटल पहुंच का विस्तार:** युवा किसानों को बाजारों से जुड़ने और आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए उपकरण प्रदान करें।
- सामाजिक सुरक्षा को बढ़ाना:** वित्तीय अंतर को दूर करें और कमज़ोर युवाओं के लिए सुरक्षा जाल प्रदान करें।

Source: DTE

'ट्रेड कनेक्ट' ई-प्लेटफॉर्म

संदर्भ

- 'ट्रेड कनेक्ट' ई-प्लेटफॉर्म को इंडिया इंटरनेशनल गारमेंट फेयर (IIGF) और टॉय बिज़ इंटरनेशनल एक्सपो में प्रदर्शित किया गया।

ट्रेड कनेक्ट ई-प्लेटफॉर्म के बारे में

- ट्रेड कनेक्ट ई-प्लेटफॉर्म वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) की एक पहल है।
- यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित जानकारी और सेवाओं के लिए सभी हितधारकों के लिए एक व्यापक केंद्र के रूप में कार्य करता है।
- यह MSMEs के लिए सरल प्राप्ति में टैरिफ़, प्रमाणन, व्यापार आयोजनों, ई-कॉमर्स और खरीदारों पर अद्यतन जानकारी प्रदान करता है।

- MSMEs को निर्यात और संबंधित प्रक्रियाओं से परिचित कराने के लिए कई भाषाओं में इंटरएक्टिव पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाते हैं।
- यह प्राथमिक और गैर-प्राथमिक उत्पत्ति प्रमाणपत्रों के जारी करने और सत्यापन के लिए एक एकल बिंदु के रूप में भी कार्य करता है — जो एक सुरक्षित, इलेक्ट्रॉनिक और पेपरलेस प्रक्रिया के माध्यम से संचालित होता है, जिसमें सभी अधिकृत जारी करने वाली एजेंसियाँ इस प्लेटफॉर्म पर एकीकृत हैं।

Source: PIB

क्रॉनिक वेनस इन्सफिशिएंसी

संदर्भ

- अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप (उम्र 79 वर्ष) को क्रॉनिक वेनस इन्सफिशिएंसी (CVI) नामक बीमारी का निदान हुआ है — यह स्थिति सामान्यतः 70 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में देखी जाती है।

क्रॉनिक वेनस इन्सफिशिएंसी (CVI) क्या है?

- यह एक संचार संबंधी विकार है जिसमें पैरों की नसें रक्त को प्रभावी रूप से हृदय तक वापस नहीं पहुंचा पातीं, जिससे रक्त निचले अंगों में जमा हो जाता है।
- यह प्रायः एक पैर से शुरू होता है और दोनों पैरों तक फैल सकता है। नसों में बढ़ा हुआ दबाव दर्द, सूजन, ऐंठन, त्वचा का रंग बदलना या मोटा होना, और गंभीर मामलों में वेनस अल्सर (खुला घाव) का कारण बन सकता है।
- प्रारंभिक चरणों में कुछ मरीजों में लक्षण दिखाई देते हैं, जबकि कुछ बिना लक्षणों के भी रह सकते हैं।
- CVI से पीड़ित व्यक्ति समान आयु और लिंग के अन्य लोगों की तुलना में **60%** अधिक संभावना रखते हैं कि उन्हें गंभीर हृदय रोग भी हो सकता है।
- इस स्थिति के कारण CVI कई कारकों से उत्पन्न हो सकता है, जैसे:
- मोटापा, गर्भावस्था, या नसों की समस्याओं का पारिवारिक इतिहास
- उच्च रक्तचाप, धूम्रपान, या व्यायाम की कमी

- लंबे समय तक निष्क्रिय जीवनशैली, विशेष रूप से वृद्धावस्था में

सावधानी / उपचार

- मरीजों को लंबे समय तक बैठने या खड़े रहने से बचना चाहिए और शारीरिक रूप से सक्रिय रहना चाहिए।
- गंभीर मामलों में, लेज़र एब्लेशन या वेन ग्लू जैसी मिनिमली इनवेसिव प्रक्रियाएं अपनाई जा सकती हैं, जो क्षतिग्रस्त नसों को बंद करके रक्त प्रवाह को सामान्य करती हैं।
- ये पारंपरिक सर्जरी जैसे वेन लिगेशन की तुलना में तेज़ रिकवरी प्रदान करती हैं।

Source: IE

सोकोट्रा द्वीप

संदर्भ

- संयुक्त अरब अमीरात और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की फ़िल्ड टीमों ने यमन के सोकोट्रा द्वीप पर एक व्यापक स्वास्थ्य मूल्यांकन के पहले चरण को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

सोकोट्रा द्वीप के बारे में

- सोकोट्रा द्वीप एक दूरस्थ यमनी द्वीपसमूह है, जो हिंद महासागर में स्थित है और अरब प्रायद्वीप के दक्षिण में लगभग **380** किलोमीटर की दूरी पर है।
- यह उत्तर-पश्चिमी हिंद महासागर में, अदन की खाड़ी के पास स्थित है, और लगभग **250** किलोमीटर तक फैला हुआ है। इसमें चार द्वीप एवं दो चट्टानी टापू शामिल हैं, जो अफ्रीका के हॉर्न का विस्तार प्रतीत होते हैं।
- सबसे बड़ा द्वीप लगभग **3,600** वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और यहां लगभग **60,000** निवासी रहते हैं।
- सोकोट्रा अपनी असाधारण जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है — यहां की लगभग **एक-तिहाई** पौधों की प्रजातियाँ केवल यहाँ पाई जाती हैं और विश्व के किसी अन्य स्थान पर नहीं मिलतीं।
- अपनी प्राकृतिक महत्ता के बावजूद, सोकोट्रा को यमन के गृह युद्ध से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

- इस द्वीप को 2008 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त हुई थी।



Source: DDNews

